

बोलते शब्द Sound and Expressions

Department of Education in Languages

भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तुत नाटक

चारुदत्तम्

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं, न सा विद्या न सा कला।
न स योगो न तत्कर्म, नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥

भाषा विचारों या भावों को प्रकट करने का एक जीवंत एवं सशक्त माध्यम है। भाषा सीखने अथवा सिखाने के लिए उसका निरंतर प्रयोग में होना आवश्यक है। संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है, किंतु बोलचाल की भाषा में इसका प्रयोग अन्य आधुनिक भाषाओं की अपेक्षा आज थोड़ा कम होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें आज संस्कृत भाषा को रुचिकर तरीके से सिखाने के लिए अभिनव शिक्षण विधियों के साथ-साथ अभिनव प्रयोगों द्वारा इस भाषा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

साहित्य न केवल ऐंद्रिय (आनंद) दृष्टि से अपितु ऐतिहासिक, बौद्धिक, सामाजिक, वैज्ञानिक उपयोगिता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अतएव संस्कृत भाषा के साहित्य में शैक्षणिक दृष्टिकोण से सिखाने के लिए अनेक विधाएँ पूर्ण रूप से विद्यमान हैं। इन्हीं में से एक नाट्य विधा है, जिसका महत्त्व एवं प्रभाव आज भी समाज में उसी रूप में विद्यमान है, जैसा कि प्राचीनकाल में था।

नाटक के माध्यम से न केवल विचारों की अभिव्यक्ति अथवा भाव-प्रकटन किया जाता है अपितु यह भाषा-शिक्षण का भी एक प्रमुख माध्यम है।

भाषा शिक्षण में नाट्य की अहम भूमिका होती है जिसे निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया गया है -

- व्यक्ति व समाज का मनोरंजन करना
- विविध परिस्थिति के अनुसार (अनुकूल) मानवीय व्यवहार की शिक्षा प्रदान करना
- भाषा ज्ञान में वृद्धि करना
- भाषा शिक्षण नाट्य की भूमिका कक्षा में अनुशासनहीनता को कम करने में सहायक सिद्ध होगी।

भाषा शिक्षा विभाग



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



आपरिताषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥

रूपांतरण



Department of Education in Languages

भासविरचितम्

चारुदत्तम्



भाषा शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

अभिज्ञानशाकुन्तलम्



भाषा की आवाज प्रेमचंद जयंती समारोह

31 जुलाई 2018

भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित

“प्रेमचंद-प्रसंग”

वक्ता : विश्वनाथ त्रिपाठी

वरिष्ठ आलोचक एवं लेखक

नाट्य-प्रस्तुति : प्रेमचंद की कहानियाँ 'बड़े भाई साहब' एवं 'चोरी'
'मुखा-मुखम' समूह द्वारा

31 जुलाई 2018, प्रातः 10:30 बजे से

एनआईई ऑडिटोरियम (एसबीआई के ऊपर) जानकी अम्माल खण्ड,
एनसीईआरटी, अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016

संपर्क : 011-26565336



Bhasha Ki Awaaz

Celebration of birth anniversary of Premchand

31 July 2018

“Premchand Prasang”

Speaker: Vishwanath Tripathi

Eminent critic and writer

*Drama Presentation: On two Stories of Premchand
Barey Bhaishab & Chori by Mukha-Mukham Group*

Tuesday, 31 July 2018 at 10:30 am

*NIE Auditorium, Janaki Ammal Block, NCERT
Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016*

RSVP: 9968651815





Realism in Premchand's writings unfolds into universal perspectives



*Premchand's writings have layers of meaning.....
The writings are futuristic*





There is no one who is like premchand in creativity and expression





रूपांतरण



भाषा की आवाज़

प्रेमचंद जयंती समारोह

प्रेमचंद-प्रसंग

वक्ता : विश्वनाथ त्रिपाठी

नाट्य-प्रस्तुति : 'बड़े भाई साहब' एवं 'चोरी'
'मुखा-मुखम' समूह द्वारा

31 जुलाई 2018

स्थान : एनआईई, सभागार, जानकी अम्माल खण्ड, एनसीईआरटी

प्रातः 10:30 बजे
भाषा शिक्षा विभाग



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016



नमक

रूपांतरण



रजिया सज्जाद जहीर 16

जन्म : 15 फ़रवरी, सन् 1917, अजमेर (राजस्थान)
प्रमुख रचनाएँ : जर्द गुलाब (उर्दू कहानी संग्रह)
सम्मान : सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार, उर्दू अकादेमी, उत्तर-प्रदेश, अखिल भारतीय लेखिका संघ अवार्ड
निधन : 18 दिसंबर, सन् 1979



हमारे दुर्लभ संकल्प ही हमारी ताकत हैं,
 हमारा लिखना ही हमें ज़िंदा रखता है।

रजिया सज्जाद जहीर मूलतः उर्दू की कहानी लेखिका हैं। उन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा घर पर रहकर ही प्राप्त की। विवाह के बाद उन्होंने इलाहाबाद से उर्दू में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1947 में वे अजमेर से लखनऊ आईं और वहाँ करामत हुसैन गर्ल्स कॉलेज में पढ़ाने लगीं। सन् 1965 में उनकी नियुक्ति सोवियत सूचना विभाग में हुई।

आधुनिक उर्दू कथा-साहित्य में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने कहानी और उपन्यास दोनों लिखे हैं, उर्दू में बाल-साहित्य की रचना भी की है। मौलिक सर्जन के साथ-साथ उन्होंने कई अन्य भाषाओं से उर्दू में कुछ पुस्तकों के अनुवाद भी किए हैं। रजिया जी की भाषा सहज, सरल और मुहावरेदार है। उनकी कुछ कहानियाँ देवनागरी में भी लिप्यांतरित हो चुकी हैं।

रजिया सज्जाद जहीर की कहानियों में सामाजिक सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता और आधुनिक संदर्भों में बदलते हुए पारिवारिक मूल्यों को उभारने का सफल प्रयास मिलता है। सामाजिक यथार्थ और मानवीय गुणों का सहज सामंजस्य उनकी कहानियों की विशेषता है। उनकी कहानियों की भाषा सहज, सरल और मुहावरेदार है।

रजिया सज्जाद जहीर

रजिया सज्जाद जहीर को नमक शीर्षक कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद सरहद के दोनों तटों के विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। दिलों को टटोलने की इस कोशिश में अपने-प्राए, देस-परदेस को कई प्रचलित धारणाओं पर सवाल खड़े किए गए हैं। विस्थापित होकर आईं सिख बीबी आज भी लाहौर को ही अपना वतन मानती हैं और सौगात के तौर पर वहाँ का नमक लाए जाने को फ़रमाइश करती हैं। कस्टम अधिकारी नमक ले जाने को इजाजत देते हुए (जिसे ले जाना गैरकानूनी है) देहली को अपना वतन बताता है। इसी तरह भारतीय कस्टम अधिकारी सुनील दासगुप्त का कहना है, "मंग वतन बाका है। राष्ट्र-राज्यों को नया सोसा-रेखाएँ खींचो जा चुकी हैं और मजहबी आधार पर लोग इन रेखाओं के इधर-उधर अपनी जगहें मुकर्रर कर चुके हैं, इसके बावजूद जमीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुँच पाई हैं। (राजनीतिक यथार्थ के स्तर पर उनके वतन को पहचान बदल चुका है, किंतु यह उनका हार्दिक यथार्थ नहीं बन पाया है।) एक अनचाही, अप्रतिभर वाहरी बाध्यता ने उन्हें अपने-अपने जन्म-स्थानों से विस्थापित तो कर दिया है, पर वह उनके दिलों पर कब्ज़ा नहीं कर पाई है। नमक जैसी छोटी-सी चीज़ का सफ़र पहचान के इस हार्दिक पहलू को परत-दर-परत उघाड़ देता है। यह हार्दिक पहलू जब तक सरहद के आर-पार जीवित है, तब तक यह उम्मीद को जा सकती है कि राजनीतिक सहर्दें एक दिन बेमानी हो जाएँगी। लाहौर के कस्टम अधिकारी का यह कथन बहुत सारगर्भित है—उनको यह नमक देते वक्त मेरी तरफ़ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मंग, तो बाकी सब रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा।

इसे पहते हुए एक सवाल हमारे मन में ज़रूर उठ सकता है—क्या धर्म-मजहब के आधार पर नयी सहर्दों के आर-पार फ़ेंक दिए गए लोगों को वह पीढ़ी जिनके दिलों में अपनी जन्म-स्थलों के प्रति गहरा लगाव है, के खलव हो जाने पर "रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाने" को उम्मीद भी खलव हो जाएगी? क्या नयी पीढ़ी के आने पर भी यह उम्मीद बनी रहेगी?

सारी शिक्षा शांति के लिए है।

मारिया मॉन्टेसरी





गोदान मेरी दृष्टि: डॉ. प्रमोद कुमार दुबे, एसोसिएट प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी

यह कलाकृति दृश्य भाषा से संबंधित गोदान की समीक्षा है। इस कलाकृति में किसान होरी की बाँह पर उपन्यास के अनेक पात्र टिके हुए हैं। कलाकृति में प्रेमचंद की आखिरी तस्वीर, जब वे मरणासन्न थे, का प्रयोग करके भारत के ग्रामीण समाज की त्रासदी को दर्शाया गया है। यह त्रासदी क्यों है? किसके शोषक पंजे से होरी की गर्दन दबी हुई है? डॉ. दुबे की कलाकृति यह सवाल दर्शकों के समक्ष रखती है।

